The Researchers' - Volume X, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 15 May 2024
DOI - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

6. Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani

Dr. Rajesh Kumar Sethiya

Assistant Professor, Hindi, Government Naveen College Tokapal, Bastar

Abstract

Gulsher Khan Shani, born on May 16, 1933, in Jagdalpur, Bastar district (now part of Chhattisgarh), was a renowned Hindi storyteller whose works gained prominence despite the socio-economic challenges of his native region. Shani was not affiliated with any specific ideology or literary school, choosing instead to depict life through a purely humanistic lens. His stories, though simple in narrative, reveal underlying progressive values, particularly in their portrayal of lower-middle-class characters grappling with life's harsh realities. Shani's protagonists often face economic hardships, social struggles, and existential dilemmas, with little hope for resolution, reflecting the broader human condition. While not directly linked to the progressive literary movement, his works resonate with progressive ideals through their emphasis on social concerns and the portrayal of the marginalized. This paper explores the progressive themes inherent in Shani's stories, highlighting how his depiction of everyday struggles reflects broader societal issues and values.

Key Words

Shani's stories, Shani and progressivism, progressive values in Shani's stories, Shani's portrayal of everyday life

Citation : Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani, **The Researchers** –July 2024, 10(2): 46-52. doi - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

The Researchers' - Volume X, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 15 May 2024
DOI - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

6. शानी की कहानियों मे प्रगतिशीलता

Dr. Rajesh Kumar Sethiya

Assistant Professor, Hindi, Government Naveen College Tokapal, Bastar

शोध–सारांश

गुलशेर खॉ शानी मूलतः कथाकार है। उनका जन्म 16 मई 1933 को वर्तमान छ.ग. के बस्तर जिले के जगदलपुर में हुआ था।[1] बस्तर जैसे पिछडे क्षेत्र में रहते हुए भी उन्होंने हिंदी साहित्य जगत में अपना खास मुकाम हासिल किया। वे किसी वाद या विचारधारा में पले बढे तथा बंधे हुए रचनाकार नहीं थे। उन्होंने जीवन और जगत को किसी वाद के चश्में से नहीं देखा। उन्होंने निपट मानवीय दृष्टि से जीवन और उसके सरोकारों को देखा और उसे अपनी कहानियों में रूपायित किया। तथापि इस सहज अंकन में भी उनके कथा साहित्य में प्रगतिवादी जीवन मूल्य और सरोकार यत्र–यत्र दिखाई देते हैं। उन्होंने निम्न मध्यवर्गीय जीवन जगत के पात्रों को अपनी रचनाओं में रूपायित किया उनके पात्र आर्थिक समस्या, जीवन जीने की समस्या और रोजमर्रा की समस्याओं का सामना करते, टूटते, घूटते पात्र हैं, उनके पास मुक्ति का कोई मार्ग नहीं है। उनके इसी जीवन संघर्ष और दारूण नियति का अंकन उनकी कहानियो में है। यह उनकी प्रगतिवादिता को दर्शाती है भले ही परंपरागत रूप से वे प्रगतिवादी आंदोलन से जुडे नहीं थे तथापि उनके साहित्य में प्रगतिशीलता के दर्शन होते है।

मूलशब्द :– *शानी की कहानियॉ, शानी और प्रगतिवाद, शानी की कहानियों में प्रगतिवादी मूल्य, शानी की रोजमर्रा की कहानियॉ।*

साहित्य अपने जन्म से ही प्रगतिशील मूल्यों की सहचरी रही है। साहित्य के उत्स में, उसके चिरंतन सौंदर्य में प्रगतिवादी मूल्य रहे हैं। यह मूल्य और संदर्भ साहित्य में प्राण और बीज की तरह समाए रहते हैं। यह जरूर है कि हम उन्हें किन संदर्भों में और कैसा देखते हैं।

Citation : Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani, **The Researchers** –July 2024, 10(2): 46-52. doi - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

The Researchers' - Volume X, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 15 May 2024
DOI - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

हिंदी साहित्य में माार्क्सवाद का साहित्यिक रूप प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है। जिसमें शोषित–पीडित, आदिवासी, दलित किसान, मजदूरों के जीवन संघर्षो और उनकी जयगाथा का अंकन किया जाता है। इस प्रगतिवादी साहित्य का केन्द्र बिन्दु शोषित–पीडित और अपेक्षित जन का जीवन संघर्ष एवं चित्रण मुख्यतः है। अपने प्रारंभिक दौर में यह प्रगतिवादी साहित्य अपनी भाव भंगिमा और तेवर के कारण पर्याप्त सुर्खियॉ बटोरता रहा, किंतु कालांतर में यह प्रचार की सीमा तक पहुॅच गया। यद्यपि पुरातन रूढिवादी मूल्यों और अंधविश्वासों तथा सामंती व्यवस्था के विरूद्ध यह अब भी अपने प्रखर तेवरों के लिए जानी जाती है। प्रगतिवादी आंदोलन बकायदा घोषणा पत्रों और लेखक संघो के माध्यम से आगे बढ़ा। वहीं साहित्यकारो की एक धारा दक्षिणपंथी मूल्यों को लेकर चलती रही, परंतु कुछ दक्षिणपंथी साहित्यकार अपने साहित्य में प्रगतिवादी मूल्यों को भी प्रमुखता से उद्घाटित करते रहे। शानी स्वयं कहते है कि –''मैं न हीयो में हूॅ न शीयों''[2] इसका आशय यह है कि वे किसी वाद या विचारधारा से बंधे रचनाकार नहीं है। वे जीवन को जैसा देखते हैं वैसा ही चित्रित करते हैं। जीवन को निरपेक्ष या तटस्थ होकर देखने की उनकी इसी प्रवृत्ति में ही उनकी प्रगतिवादी या प्रगतिशीलता के दर्शन होते है। शानी का कथा साहित्य और उसमें चित्रित जीवन, पात्र तथा जीवन–जगत के व्यापार, संपूर्ण रूप में एक नदी की तरह दिखाई देते हैं। शानी के साहित्य को प्रगतिशील संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए ऐसा ही अनुभव होता है।

शानी की लेखकीय प्रगतिशीलता के कई पहलू हैं। जिनकी ओर सहज ही ध्यान नहीं जाता। आदिवासी जीवन का चित्रांकन उन्होंने महज लेखकीय शौक के लिए नहीं किया, वरन इसे अपने दायित्व का तकाजा माना। उनके समकालीनों में जनजातीय जीवन महज उल्लासमय, मनोहर नृत्य, विलक्षण पर्व–परंपराओं, आनंद विलास के सतही अंकन तक ही सीमित है, पर शानी हमें दो कदम आगे ही दिखाई देते हैं। उनकी दृष्टि

Citation : Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani, The Researchers –July 2024, 10(2): 46-52. doi - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

The Researchers' - Volume X, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 15 May 2024
DOI - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

जनजातीय जीवन उल्लास की तह में दबी दुःख, दर्द, कराह और पीड़ा की ओर जाती है। यह हम उनके 'शालवनों का द्वीप' में देख पाते हैं, जहॉ वे माड़िया जनजाति के रीति–रिवाजों, परंम्पराओं और धार्मिक–सामाजिक मान्यताओं के मलबे में दबी मनुष्यता की पीड़ा और उल्लास दोनों को पहचानने की कोशिश करते हैं। शानी की ऑचलिक कहानियों फांस, बोलने वाले जानवर, चील, मछलियॉ, वर्षा की प्रतीक्षा आदि कहानियों में चित्रित जीवन यथार्थ उनकी प्रगतिवादी दृष्टिकोण का परिचालक है। जिसमें आदिवासी जीवन का अर्थाभाव, दैन्य, गरीबी, अशिक्षा के साथ जंगली जानवरों से असुरक्षा एवं चिकित्सा के अभाव में तिल–तिल कर गलते–मरते लोगों के चित्रण के साथ व्यक्तिमन की पीडा और अभावों का चित्रण शानी ने अपनी कहानियों में किया है जो उनकी प्रगतिवादिता को दर्शाती है।

मुस्लिम जीवन चित्रण में उनकी प्रगतिवादी दृष्टि छिपी नहीं है। मुस्लिम जीवन के धार्मिक पाखण्ड, जड़ता, पीड़ा, टूटन और अंतर्विरोधों को वे अपनी ऑखों से ओझल नहीं होने देते। साथ ही अल्पसंख्यक होने की दुर्निवार नियति, भय तथा आतंकपूर्ण स्थिति को भी व्यापक परिप्रेक्ष्य में, वृहद स्तर पर अभिव्यक्त करने वाले ऐतिहासिक रचनाकार हैं। ऐसा करते हुए शानी भावुकता का शिकार नहीं होते। वे तटस्थता व निर्ममता से परिस्थितियों का विश्लेषण करते हैं। देश, समाज सबको कटघरे में खड़ा करने का साहस और साहित्यिक कौशल शानी में है। इस दृष्टि से उनकी 'नंगे', 'जली हुई रस्सी', 'जनाजा', 'युद्ध', 'देश निकाला', 'दो जख्मी' आदि कहानियॉ महत्वपूर्ण हैं।

शानी के सम्पूर्ण साहित्य में नारी पात्र कहीं अधिक प्रगतिशील, जिम्मेदार, कर्मठ और जुझारू दिखती हैं। शानी अपने नारी पात्रों को भावना के आवेग में न बहाकर विवेकशीलता का जामा पहनाते हैं। 'नारी और प्यार' कहानी की रेनू कहीं भी भावना के आवेग में नहीं बहती। अपने प्रेमी कमल के अविवाहित रहने को वह कमल की अकारण भावुकता मानती है

Citation : Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani, The Researchers –July 2024, 10(2): 46-52. doi - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

The Researchers' - Volume X, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 15 May 2024
DOI - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

और उसे विवाहित के लिए प्रेरित करती है। अपने पति और बच्चों के हवाले से वह अपने भावात्मक रूप से समृद्ध पारिवारिक जीवन का संकेत भी देती है।[3]

शानी की प्रगतिशील दृष्टि का एक उदाहरण उनकी 'सीढियॉ' में भी देखा जा सकता है कहानी की नायिका रेहाना उर्फ रूही एक समझदार चरित्र है। कथावाचक 'मैं' और रूही की शादी बचपन में ही तय हो चुकने के बावजूद हैसियत में अंतर आ जाने के कारण टूट जाती है। अपने ससुराल में दुःख झेलते हुए भी रूही अपने पूर्व संबंधों को लेकर कहीं भी भावुक नहीं होती। वह कथावाचक से कहती है, 'दुनिया में कितने रिश्ते बनते–बनते रह जाते हैं। हर एक से मन को बॉध लेना क्या समझदारी की बात है.....? आज सोचती हूँ कि तुमसे ब्याही गई होती तो क्या जरूरी था कि दुःख नहीं पाती?'[4]

आज तथाकथित विकास के नित नए आयाम गढ़े जा रहे हैं पर अपनी संकीर्णताओं से हम मुक्त नहीं हो पाए हैं। किसी उन्मुक्त विचारों वाली नारी के प्रति हमारी सोच जगजाहिर है। कहानी 'एक काली लड़की' के मेहरून के बहाने शानी इसी संकीर्णता पर चोट करते हुए उन्मुक्त विचारों का समर्थन करते हैं। मेहरून के शब्दों में, 'अकेले इसरार की बात नहीं, आप सभी लोगों की एक खास कमजोरी लगती है। क्या यह जरूरी है कि लड़की जिस–जिस से मिले, उन सबको प्यार करती चले? मैं कल आपके घर चली गई या मैंने आपको बिठा रखा है, क्या इसका मतलब यही होता है कि मैं आपसे शादी करना चाहती हूँ?'[5] शानी की 'एक संधि' और की ताहिरा और 'छल' की नाजो भी ऐसी ही चरित्र हैं।

रूढ़ियों की बेड़ियों को काटे बिना प्रगति असंभव है। 'गुलमोहर का पेड़' में तकदीर के मारे इसरार भाई की बेकारी और बेबसी तथा गैरजिम्मेदारी से तंग आकर साहिरा तलाक देने का निर्णय करती है परंतु अस्पताल में इसरार की लावारिस तथा मृतप्राय सी स्थिति देखकर अपना निर्णय बदल लेती है। वह पर्दा त्यागकर कुछ भी कार्य करके गृहस्थी की

Citation : Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani, The Researchers –July 2024, 10(2): 46-52. doi - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

The Researchers' - Volume X, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 15 May 2024
DOI - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

जिम्मेदारी स्वयं संभालने को तत्पर होती है।[6]

शानी की प्रगतिशील चेतना ऑखों देखी सच्चाइयों को ज्यों का त्यों उद्घाटित करके पाठक पर ही निर्णय छोड़ देती है। वह बिजली का झटका नहीं देती, वरन निस्तब्ध निशा की तरह चुपचाप ओस की बूँदें ढारती है। शानी की ऐसी कहानियों में 'चहल्लुम', 'भीतर–बाहर', 'बिरादी', 'जगह दो', 'रहमत के फरिश्ते आएँगे', 'मासूम बाबा' आदि मुख्य हैं। इन कहानियो में मुस्लिम समाज के वर्ग भेद, उॅच नीच, पाखंड, अंधविश्वासों का पर्दाफाश शानी ने किया है। ऐसा करना शानी की प्रगतिवादिता को दर्शाती है।[7] शानी के लिए उनका अंतिम न्यायाधीश पाठक ही है। 'बोलने वाले जानवर' तथा 'मछलियॉ' कहानियों में आदिवासियों के प्रति तथाकथित शहरी सभ्यजनों की दोहरी मानसिकता का अंकन है। मिसेज जोंस के लिए सूअर का पिल्ला प्यारा है, लेकिन याज पीड़ित महिला की ओर वो देखती तक नहीं।[8]

शानी की अधिकांश कहानियॉ सर्वहारा वर्ग के जीवन, दुःख और दर्द की कहानियॉ है। शानी प्रेमचंद और यशपाल की परंपरा के प्रगतिशील कथाकार हैं। क्या शानी की 'रहीम चाचा', 'नंगे', 'भूले हुए', 'चूल्हे का चॉद', 'जली हुई रस्सी' जैसी कहानियों को प्रेमचंद की 'पूस की रात' और यशपाल की 'परदा' से पृथक कर के देखा जा सकता है?–नही।

निष्कर्ष

इस प्रकार शानी की कहानियो में निम्नमध्यवर्गीय जीवन समस्त अच्छाइयों एवं विसंगतियो, अंतर्विरोधों के साथ मौजूद है। वे निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम जीवन, आदिवासी जीवन चित्रण और निम्न मध्यवर्गीय सर्वहारा वर्ग के जीवन चित्रण के समर्थ रचनाकार है। वे प्रगतिवाद से संबंद्ध रचनाकार नहीं है परंतु, उनकी रचनाओं मे प्रगतिवादी जीवन मूल्यों की अनायास, सहज अभिव्यक्ति हुई है।

Citation : Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani, **The Researchers** –July 2024, 10(2): 46-52. doi - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

The Researchers' - Volume X, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 15 May 2024
DOI - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

संदर्भ

1- बस्तर का लोक जीवन और शानी की कहानियॉ–डॉ. राजेश सेठिया एवं दीपक सेठिया–पृष्ठ 8

2- हंस मार्च 1995, पृष्ठ 10

3- –सब एक जगह–एक–शानी पृष्ठ 50

4- –वही– पृष्ठ 70

5- –वही– पृष्ठ 56

6- –वही– पृष्ठ 80

7- बस्तर जीवन यथार्थ और शानी के उपन्यास–डॉ. राजेश सेठिया–पृष्ठ 62

8- बस्तर का लोक जीवन और शानी की कहानियॉ–डॉ. राजेश सेठिया एवं दीपक सेठिया–पृष्ठ 70

Citation : Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressive Themes in the Stories of Gulsher Khan Shani, **The Researchers** –July 2024, 10(2): 46-52. doi - 10.21276/tr.2024.10.2.AN6